आचार्य आर्यनन्दि

जीवन-परिचय : तमिल प्रदेश में 'अज्जनन्दि' अर्थात् आर्यनन्दि नाम के प्रभावशाली आचार्य हुए हैं। उनका व्यक्तित्व महान था। सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तमिल प्रदेश में जैन धर्म के अनुयायियों के विरुद्ध एक भयानक वातावरण उत्पन्न हुआ। परिणामस्वरूप वहाँ जैनधर्म का प्रभाव क्षीण हो गया और उनके सम्मान को ठेस पहुँची। ऐसे विषम समय में आर्यनन्दि आगे आये। उन्होंने समस्त तमिल प्रदेश में भ्रमण कर जैन धर्म के प्रभाव को पुन: स्थापित करने के लिए जगह-जगह जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ स्थापित कराई। इससे आर्यनन्दि के साहस और विक्रम का पता चलता है।

इनका समय 8वीं, 9वीं शताब्दी है। इनका कार्यक्षेत्र मदुरा और त्रावणकोर आदि स्थान भी रहा है। आर्यनन्दि ने उत्तर और दक्षिण में कई स्थानों पर मूर्तियों का निर्माण कराया। यह कार्य महत्त्वपूर्ण तथा जैनधर्म की प्रसिद्धि के लिए था।

रचना-परिचय : आपकी एक भी रचना उपलब्ध नहीं है।